National Journal of Advanced Research
Online ISSN: 2455-216X; Impact Factor: RJIF 5.12
www.allnationaljournal.com
Volume 3; Issue 2; May 2017; Page No. 35-38

हरियाणा राज्य के सेवारत प्राईमरी एवं माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा समस्याओं का अध्ययन

[1] Reeta Choadhary, [2] Dr. Sanjay Kumar
[1] Research Scholar, DBHPS, Institute of National Importence, Madras, Tamil Nadu, India
[2] Assistant Professor, Dept. Of Education SRM University, NCR Campus, Modinagar, Uttar Pradesh, India

Abstract
एक शिक्षक समाज की धुरी होता है। वह अपने आचरण से, कार्य से व अपनी सोच से समाज व विद्यार्थीयों पर गहरा प्रभाव डालता है। प्राईमरी स्कूल छात्रों के लिए विषेश स्थान होता है। समाज में आने वाले बदलाओं या समाज में लाये जाने वाले बदलाओं के मूल में एक शिक्षक का व्यक्तित्व होता है। किसी भी सामाजिक निष्कर्श पर पहुचने से पहले एक शिक्षक का अध्ययन करना आवश्यक है। उसके के शिक्षण–प्रशिक्षण व शिक्षा पद्धति का अध्ययन भी आवश्यक हो जाता है।

Keywords: प्राईमरी स्कूल व अभिवृति

प्रस्तावना Introduction

शिक्षा का सम्बन्ध समाज तथा व्यक्ति दोनों से ही होता है। शिक्षा का लक्ष्य जीवन को समुन्नत बनाना, शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति, जीवन पद्धति में समानता, मानव जीवन को सरल बनाने में सहायता प्रदान करना आदि है किन्तु वर्तमान में इनमें अन्तर आ गया हैं। विद्यालय में जो कुछ सिखाया जाता है,उसे समाज में सामन्जस्यपूर्वक जीवन यापन करने में सहायक होनी चाहिए। सामन्जस्य एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मनुष्य अच्छे ढंग से अपनी परिस्थितियों को अनुकूल बनाने या अपने को परिस्थितियों के अनुसार व्यवस्थित करने के लिए प्रयास करता है ताकि उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके तथा पर्यावरण और परिस्थितियों के साथ उसका सन्तुलित सम्बन्ध बना रहे एवं उनके मध्य पारस्परिक द्वन्द्व या चुनौती की स्थिति उत्पन्न हो। अतः इस कार्य हेतु शिक्षक को जानना चाहिए कि छात्रों के व्यवहारों में क्या परिवर्तन या संशोधन होना चाहिए। शिक्षा आयोग (1952–53) में कहा गया है कि ''प्रधानाचार्य एवं अध्यापकों को मिलकर ऐसी व्यावहारिक योजना बनानी चाहिए जो चरित्र की शिक्षा को सफल बना सकें।'' यथार्थवादियों का भी मत है कि बालक को इस योग्य बनाना कि वह वास्तविक जगत को पहचान सके और लौकिक एवं व्यावहारिक जीवन का रहस्य समझ सकें।

वर्तमान में जहाँ एक तरफ मनुष्य स्वचालित भौतिक और अन्तरिक्ष सभ्यता की ओर अग्रसर हो रहा है वहीं दूसरी ओर उसकी अस्मिता को बाँधने वाले अदृश्य संवेदनाओं के तन्तु बिखरते जा रहे हैं। यहबिखरी चेतना उसे लोकमंगल और कल्याणकारी शक्ति दे पायेगी अथवा नहीं यह प्रश्न पिछले दशकों से बुद्धिजीवियों के चिन्तन का क्षेत्र बना हुआ है। मूल्यों का स्वरूप विविध है। मानव जीवन अपने समष्टिगत रूपों में धार्मिक, नैतिक, आध्यात्मिक सामाजिक, राजनैतिक आदि पक्षों में बँटा हुआ है परन्तु इन सभी में एक प्रकार का सन्तुलन व्याप्त है। इसका कारण आचरण एवं व्यवहारों का एक आधार एवं खाका ळे जिसमें अपेक्षित कार्य की शर्त जुड़ी हुई है। इसका पालन तथा इसके प्रति आस्था रखने से व्यक्ति को स्वस्थ एवं समायोजित जीवन यापन में सहायता मिलती है। इस प्रकार मूल्य न तो कौशल है और न ही ज्ञान के अंश जिन्हें सीखा जाये। यह तो आस्था एवं विश्वास है, आदर्श एवं प्रतिबद्धताएं हैं जिसका सम्बन्ध मानसिक मनोवैज्ञानिक निर्माण से होता है। इसका सम्बन्ध मनुष्य द्वारा अपनायी जाने वाली आदत एवं व्यवहार में अभिव्यक्त मानव तत्व से होता है। आज मनुष्य अपनी बौद्धिक शक्ति तथा क्रियाशीलता के कारण इतना शक्तिशाली बन चुका है कि उसके द्वारा किये गये भौतिक एवं अभौतिक परिवर्तन उसकी सामाजिक समायोजन को चुनौती देने लगे हैं।

अतः स्पष्ट है कि प्राकृतिक, मानवीय, भौतिक कारकों के प्रभाव से सामाजिक व्यवस्था तथा जीवन शैली में तीव्र परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तनों को ही सामाजिक परिवर्तन कहते हैं। आज हमारे यहॉ शिक्षक हैं, अध्यापक हैं, वे छात्रों को निधारित पाठ्यक्रम के अनुसार शिक्षा भी देते हैं किन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण बात जीवन निमार्ण का व्यावहारिक शिक्षण आज नही हो पा रहा है। आज गुरू–शिष्य की तरह शिक्षक और छात्र का सम्बन्ध पहले जैसे नही रहे। केवल कुछ अक्षरीय ज्ञान दे देने, एक निश्चित समय तक कक्षा में उपस्थित रहकर कुछ पढ़ा देने के बाद शिक्षक का कार्य समाप्त हो जाता है तथा व्याख्यान सुनने के बाद विद्यार्थी का भी मुक्त हो जाता है। अध्यापक और विद्यार्थी के बीच जो स्नेह, भाव, आत्मीयता, सौहाद्र, समीपता की आवश्यकता है, वह आज नही है और यही कारण है कि आज का विद्यार्थी डिग्री, डिप्लोमा ले लेता है लेकिन व्यावहारिक जीवन का शिक्षण, चरित्र, ज्ञान उत्कृश्ट व्यक्तित्व का उसमें अभाव रहता है। इन सबके बिना विद्या अधूरी है। जो जीवन को प्रकाशित न करे, पुष्ट न बनाये तो वह विद्या किस काम की। ?

चरित्र निमार्ण की, व्यवाहारिकता की शिक्षा की पुस्तकों में नही मिल सकती। वह तो व्यक्ति की समीपता से, उसके चरित्र, आचरण को देखने, समझने से प्राप्त होता है, जो आज की शिक्षा–पद्धति में नही के बराबर है। एक बार कवीन्द्र रबीन्द्र ने कहा था– ''शिक्षाके सम्बन्ध में एक महान सत्य हमने सीखा था कि मनुश्य से ही मनुश्य सीख सकता है। जिस तरह जल से ही जलाशय भरता है, दीप से ही दीप जलता है, उसी प्रकार प्राण से प्राण सचेत होता है। चरित्र को देखकर ही चरित्र बनता है। गुरू के सर्म्पक–सान्निध्य, उसके जीवन से प्रेरणा लेकर ही मनुष्य– मनुष्य बनता है।'' आज का ''शिक्षक महोदय प्राण नही दे सकता, चरित्र नही देता, वह व्याख्यान दे सकता है। इसलिए आज का छात्र किसी दफतर, अदालत का एक बाबू बन सकता है लेकिन मनुष्य नही बन पाता है।''

शैक्षिक शोध की आवश्यकता क्यों? (Why Need of the study)

शिक्षक की वर्तमान दशा

यह सत्य है कि आज शिक्षक सामान्यतया अपने व्यवसाय से असन्तुष्ट है। यद्यपि आज से कुछ वर्ष पहले जबकि शिक्षकों की दशा वास्तव में खराब थी, तब भी उनका व्यवहार इस तरह का नहीं था। वे

छात्रों के भविष्य को प्राथमिकता देते थे तथा अध्यापक की गरिमा पूर्ण छवि बनाये रखते थे। वे समाज के सबसे आदरणीय पात्र थे। आज जबकि उनका वेतन आकर्षक हो गया है, वे अन्य कार्यो में ज्यादा लिप्त पाये जाते हैं। जैसे–जैसे सुविधाएँ बढ़ती जा रही है, वैसे–वैसे तृष्णा का आकार भी बढ़ता जा रहा है। अन्य व्यवसायों की तरह आज का अध्यापक भी पैसे को अधिक महत्व देता है। आज वह बेचैन है तथा पुराने समय के गुरूओं से भिन्न है। वह आज नारेबाजी, रैली निकालने तथा लड़ाकू रूख आख्तियार करने में तनिक भी नहीं हिचकता। उसकी शान्तिप्रियता एक नकाब है, जिसे वह किसी भी क्षण हटा सकता है। इस वर्ग के कुछ लोग परीक्षा परिणामों में हेर–फेर करवाने, दलाली करने, स्थानान्तरण करवाने तथा लाभ के लिए राजनैतिक दलों से साँठ–गाँठ करने से नहीं चूकते हैं। ऐसे कामों को वे धनोपार्जन का अतिरिक्त साधन मानते हैं और यह भूल जाते हैं कि अध्यापक का सिर्फ और सिर्फ एक ही काम है – ''समाज को ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित करना''। अगर आज की शिक्षा व्यवस्था पर उंगलियाँ उठ रही हैं तो अध्यापक का भी इसमें दायित्व है जिन्होंने कार्य सम्पादन में शिथिलता अथवा अशैक्षिक कठिनाइयाँ पैदा करके इस व्यवस्था को कमजोर किया है। संक्षेप में, आज का अध्यापक, समाज उसकी जो छवि देखना चाहता है, उसके अनुरूप बनने को कतई तैयार नहीं है। वर्तमान समय में बी0एड0 या बी0टी0सी0 करने के लिए लाखों रूपये खर्च करने के बाद जो भी व्यक्ति सरकारी अध्यापक बन जा रहा है, वह अध्यापक ज्ञान के विस्फोट के सत्य को स्वीकार करने कौ तैयार नहीं है और न ही अपने शिक्षण सम्भावनाओं को मान रहा है। आज का अध्यापक येन–केन प्रकारेण अपनी सुविधानुसार विद्यालयों के चयन हेतु सदैव परेशान रहता है। शायद इसी कारण वह पठन–पाठन कार्य में, या कक्षा में जाने में रूचि नहीं लेता। इस परिस्थिति में यह कहना अनुचित नहीं होगा कि आज का अध्यापक बदल गया है, पुराने मापदण्डों पर खरा नहीं बैठ रहा और वह बिना काम किये सफल डाक्टर के समान महत्वाकांक्षी हैं। आज का अध्यापक यह भूल रहा है कि आदर या पद कार्य से प्राप्त करना होता है, थोक के भाव नहीं मिलता। वह श्रेष्ठता प्राप्त करने का प्रयास ही नहीं कर रहा है। वह भूल गया है कि उसका भविष्य उसके ज्ञान एवं उसकी कार्यनिष्ठा में निहित है। कुछ विद्वानों का मत है कि समाज की शिक्षकों के प्रति उपेक्षापूर्ण नीति भी शिक्षकों की दशा को दयनीय बनाने में महत्वपूर्ण कारक है। वेतन एवं अन्य सुविधाओं के बाद भी शिक्षक का जीवन समाज के अन्य लोगों की तुलना में खराब ही पाया जाता है। अच्छे स्कूलों, कॉलेजों या विश्वविद्यालयों में प्राथमिकता के आधार पर उनके बच्चों का दाखिला दिलाने का कोई इन्तजाम नहीं होता है। बच्चों को उच्च तकनीकी शिक्षा दिलाने में भी वे अपने को सामर्थ्यहीन महसूस करते हैं।

समस्या कथन (Statement of the problem)

प्रस्तुत शोध विशय का शीर्शक–

''हरियाणा राज्य के सेवारत् प्राइमरी एवं माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति

शोध अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of research work)

अनुसंधान प्रस्ताव एक तर्कयुक्त बौद्धिक प्रक्रिया है, इसका उद्देश्य समस्या समाधान के प्रति अग्रसरण करना है। ऐसी समस्या किसी क्षेत्र से सम्बद्ध होती है। किसी भी शोधकर्ता का कार्य उसके उद्देश्यों में समाहित व निर्देशित होता हैं। वस्तुतः प्रस्तुत अध्ययन के प्राप्य उद्देश्य रोहतक जिले के प्राइमरीएवं माध्यमिक स्तरीय विद्यालयों के छात्रों के संदर्भ में शोधकर्ता द्वारा निम्न लिए गए हैं–

1. सेवारत् ग्रामीण प्राइमरी स्तरीय शिक्षकों–शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. सेवारत् कस्बे के माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों–शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. सेवारत् शहरी प्राइमरी स्तरीय शिक्षकों–शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

तथा समस्याओं का अध्ययन'' है/

परिकल्पना (Hypothsis)

प्रस्तुत अध्ययन अपने आप मे एक नवीन व महत्वपूर्ण अध्ययन है और इस प्रकार के उद्देश्यो को लेकर किए कए अध्ययनो का भी इस संभाग मे अभी अभाव है। वस्तुतः प्रस्तुत अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने उद्देश्यों की प्रकृति को देखते हुए शून्य परिकल्पना का उपयोग किया है। इस आधार पर अध्ययन के प्राप्य उद्देश्यो में प्रयुक्त शून्य परिकल्पनाओं का विवरण निम्नवत हैं–

1. सेवारत् प्राइमरी एवं माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. सेवारत् कस्बा क्षेत्र के प्राइमरी एवं माध्यमिक स्तरीय सेवारत् शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. ग्रामीण क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक सेवारत् अध्यापकों की अभिवृत्ति सूची में कोई सार्थक अन्तर नही है।

जनसंख्या (Population)

जनसंख्या से अभिप्राय उन सभी व्यक्तियों, वस्तुओं अथवा तथ्यों के समूह से होता है, जो पूर्व परिभाषित विशेषताओं के क्षेत्र में आता है। प्रस्तुत अध्ययन में कारक संरचना के आधार पर बहु–स्तरित दैव न्यादर्श विधि द्वारा हरियाण प्रदेश के रोहतक जिले के आस–पास के जिलों के प्राइमरीएवं माध्यमिक स्तरीय के 600 शिक्षकों का चयन किया गया।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

सम्पत कुमार डी0 (अगस्त 2012) ''भारत में शिक्षा का सुधार उपलब्धियाँ'' इनके अनुसार भारत एक वैश्विक नेता और एक मजबूत राष्ट्र के रूप में उभरा है और यह शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। राष्ट्र निर्माण के लिए उपेक्षित ज्ञान और निरन्तर विकास की राह में जनसंख्या सबसे बड़ी बाधक है। जिससे यह भारत की 25 प्रतिशत की आबादी को निरक्षर करती है। हमारी शिक्षा प्रणाली जिज्ञासा और सवाल पूछने की क्षमता को कुछ कम करने की होड़ होती है। जिससे प्रतिभाशाली छात्रों को कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और शिक्षा हमारे साथ शुरू से है और अन्त तक रहेगी और इस तरह शिक्षा के स्तर को उठाने का प्रयास हर विकसित तथा विकासशील देशों की करना चाहिए।

अभिपाशा बेन एवं याज्ञिनक (जून 2014) ''ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षकों का छात्राओं की शिक्षा में भूमिका'' शिक्षकों की बदलती भूमिका उन्हें एक बोर्ड के नजरिये के लिए एक धक्के समान है। जो दोनो के लिए एक मुख्य शैक्षिक और उनकी सामाजिक भूमिका का गठबन्धन है। शिक्षकों को भी दो स्थितियों के बीच अपने शैक्षिक कर्तव्यों का निर्वाह करना चाहिए इस प्रकार प्राथमिक स्तर पर शिक्षको की भूमिका प्रकृति में बहुआयामी है।

परिकल्पना संख्याः 1

1. सेवारत् प्राइमरी एवं माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।

सारणी संख्याः 1: सेवारत् प्राइमरी एवं माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति अनुसूची के आधार पर प्राप्त मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं क्रान्तिक निष्पत्ति।

शिक्षक स्तर	संख्या (N0.)	मध्यमान (Mean)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	मध्यमान अन्तर (M~M)	क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R. or t) = $\frac{M_1 - M_2}{SE_D}$	सार्थकता
प्राइमरी स्तर	100	30.84	40.76	0.76	1.4	असार्थक
माध्यमिक स्तर	100	30.08	0.76			

प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण

परिकल्पना संख्या 1: 1. सेवारत् प्राइमरी एवं माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों–शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नही होता है।

सारणी संख्या 1: के अनुसार नगर क्षेत्र के प्राइमरी एवं माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों–शिक्षिकाओं, की अभिवृत्ति अनुसूची के आधार पर प्राप्त मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं क्रान्तिक निष्पत्ति को स्पष्ट किया है। अतः अन्तर सार्थक नहीं है। इसलिए अमान्य शून्य परिकल्पना संख्या–1.1. को स्वीकार किया जाता है।

सारणी संख्या 2: 2′ कस्बा क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तरीय सेवारत् अध्यापकों की अभिवृत्ति पर प्राप्त मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, एवं क्रान्तिक निष्पत्ति अनुपात–

अध्यापक स्तर	संख्या (N0.)	मध्यमान (Mean)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	मध्यमान अन्तर (M~M)	क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)	सार्थकता
प्राईमरी	100	25-06	2-84	3-21	8.6	0.01 स्तर पर सार्थक
माध्यमिक	100	21-85	2-87			

प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरणः

सारणी नं0 4.2 में कस्बा क्षेत्र के प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तरीय सेवारत् अध्यापकों के अभिवृत्ति प्राप्तॉकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, एवं क्रान्तिक निष्पत्ति प्रस्तुत किया गया है। प्राइमरी सेवारत् शिक्षकों का मध्यमान प्राप्तॉक 25.06 प्राप्त हुआ है।

जबकि माध्यमिक अध्यापकों का मध्यमान प्राप्तॉक 21.85 प्राप्त हुआ है। इससे स्पष्ट होता है कि प्राईमरी अध्यापकों की अभिवृत्ति सेवारत् के प्रति माध्यमिक अध्यापकों की तुलना में अधिक है। क्योंकि प्राइमरी अध्यापकों की अभिवृत्ति 3.21 अधिक रही है। इस अन्तर की सार्थकता के लिये क्रान्तिक निष्पत्ति की गणना शोधकर्ता ने की जो 8.6 है। यह प्राप्तॉक 0.01 और 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक है।

व्याख्याः– जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है। कि प्राइमरी तथा माध्यमिक स्तरीय सेवारत् अध्यापकों की अभिवृत्ति प्राप्तॉकों में सॉख्यिकीय दृष्टिकोण से कोइ अन्तर है। इससे यह निष्कर्श निकलता है। कि माध्यमिक अध्यापकों की तुलना में प्राईमरी अध्यापकों की सेवारत् के प्रति अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति है।

शोध–अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ

आधुनिक काल में जीवन के अभिवृत्ति, सामाजिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति

कमी आई है। इस कमी का मुख्य कारण शैक्षिक कार्यक्रमों, वातावरण व संस्थानों में मूल्यों के प्रति सहज न होना है। प्रतिस्पर्धा से परिपूर्ण वातावरण में किसी भी समाज में मूल्यों के लिये आवश्यक सहृदयता नहीं रह जाती है। इसके अतिरिक्त अन्य कारणों में आधुनिकता, पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण, अनीश्वरवाद, वैज्ञानिक उपकरणों की खोज, तर्क प्रधान चिंतन, पार्थिव मूल्यों के प्रति अप्रत्याशित मोह, आदि प्रमुख हैं। आज की परिस्थितियों में मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में उन बिन्दुओं पर विचार करना अत्यंत आवश्यक हो गया है, जिनसे छात्रों के विघटित हुए शाष्वत जीवन मूल्य उनके जीवन को प्रभावित करते हैं।

प्रस्तुत शोध–अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता निम्नवत है–

1. शोध–अध्ययन के परिणाम शिक्षा जगत, नीति विशेषज्ञों, नीति निर्देशकों एवं निर्धारकों,परामर्श दाताओं के दृष्टिकोणों (विशेषकर माध्यमिक शिक्षा एवं उच्च माध्यमिक शिक्षा के सन्दर्भ में) को विकसित करने में सहायक होगें। इससे विविध समस्याओं के समाधान में नये आयाम प्रस्तावित किये जा सकते हैं।
2. सेवारत् शिक्षक शोध–अध्ययन से लाभान्वित होकर अपने जीवन की समस्याओं से समायोजन उचित प्रकार से कर सकेंगे। जिससे उनका मानसिक स्वास्थ्य भी बेहतर होगा, साथ ही जीवन में आवश्यक संतुष्टि स्तर को प्राप्त कर सकेंगे।
3. शोधों द्वारा जागरूक व आत्मनिर्भर बनकर कार्य करने की प्रवृत्ति उनके विकास में सहायक होती है। जीवन मूल्यों के ह्रास के कारण व्यक्ति में सहयोग की भावना कम तथा प्रतियोगी भावना अधिक परिलक्षित होती है, जिससे आज प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में तनाव एवं असन्तुष्टि महसूस करता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची (Reference book list)

1. अदाबल यस बी– क्वालिटी ऑफ टीचर्स ट्रे ऑफ टीचर्स अभिताभ प्रकाशन इलाहाबाद 1979
2. अरोरा के –डिफरेन्सेज बिटविन इफेक्टीब एन्ड इन इफेक्टीब टीचर्स नयी दिल्ली यस चॉद 1978
3. अल्पोर्ट, बर्नन औरलिन्डजे– मैनुबल फॉर द स्टडी ऑफ वेल्यूज वोस्टन 1960
4. अहलूवालिया यस.पी–डेवेल्पमेंट ऑफ टीचर एटीट्यूड इनमेन्टरी एण्ड स्टडी ऑफचेन्ज इन प्रोफेसनल एटीट्यूड ऑफ स्टूडेन्ट टीचर डिपार्टमेन्ट ऑफ बी.यच.यू. 1974
5. आयजेनिक–मैनुअल ऑफ माडस्ले परसोनेलिटी इन्वेन्टरी यूनिवर्सिटी ऑफ लन्दन प्रेस, 1959 बी
6. आन्नद यस. पी.–टीचर इफीक्टीभनेस इन स्कूल्स जनरल ऑफ इण्डियन एजूकेशन 1983
7. आलपोर्ट, परसेनेलिटी–ए साइकोलोजिकल इण्टरप्रीटेशन, न्यूयार्क, हाल्ट, 1937
8. आलपोर्ट, जी.डब्लू.–एटीटॅयूड इन सी. मरचिंसन (इड)'' हैण्डबुक ऑफ सोसल साइकोलाजी, क्लोर्क यूनिर्वसिटी प्रेस 1935

9. इनसाइकलोपिडिया ऑफ एजूकेसनल रिसर्च, थर्ड एडीसन, न्यूयार्क
10. एण्डूज जान एच एम–एण्डमिनिस्ट्रेटिभ सिगनिफिकेंस ऑफ साइकोलोजिक डिफरेसेज विटवीन सेकेण्डरी टीचर्स ऑफ डिफरेन्ट सब्जेक्ट फिल्ड''एलबर्ट जरनल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च दिसंबर1957(3)
11. ओजुम्बा के. ई. –ए ऑफ रिम्यू स्टेट ऑफ आर्ट ऑफ रिसर्च आन एसेसिंग टीचर एफकेटिभनेस, अफ्रीका, ओटबा आईडीआरसी 1978
12. कक्ड़–ए स्टडी ऑफ बेल्यू ऑफकालेज एण्ड पर्सपेक्टिभ टीचर्स बाई ए0भी0 यल, मैथड 1971'' रिपोर्ट ऑफ इ0 आर0 आई0 सी0 फन्डेड रिसर्च रिपोर्ट 1986